नेपाल में होता चीरहरण

एक पुरानी कहावत है कि अगर किसी को समाप्त करना हो तो उसकी पहचान मिटा दो। यह केवल व्यक्ति विशेष पर ही लागू नहीं होता अपितु समाज और राष्ट्र पर भी अक्षरशः लागू होता है। राष्ट्र मात्र एक जमीन का टुकड़ा नहीं अपितु यह भूसांस्कृतिक अव-धारणा भी है। लेकिन बेईमान और पथभ्रष्ट कम्युनिस्टों एवं माओवादियों को कौन समझाये। पिछले दो वर्षों से नेपाल में माओवादी आतंकवादियों तथा पथभ्रष्ट राजनेताओं के द्वारा जो कुछ भी किया जा रहा है वह नेपाल की पहचान समाप्त करने का ही उतावलापन है, जिसे राष्ट्र माता का चीरहरण ही कहा जायेगा। नेपाल चिरकाल से भारत की ही तरह हिन्दू धर्म, संस्कृति और समाज का प्रमुख केन्द्र रहा है। निवर्तमान शाह राजवंश ही नहीं इसके पूर्ववर्ती सभी राजवंश निरपवाद रूप से सनातन धर्म और उससे निकली विभिन्न उपासना पद्धति को मानने वाले रहे हैं। ज्ञात इतिहास के सम्पूर्ण कालखण्ड में नेपाल एक स्वाभाविक हिन्दू राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। इतना ही नहीं आज से लगभग तीन शताब्दी पूर्व जब तत्कालीन गोरखा नरेश पृथ्वी नारायण शाह देव ने बाईसी और चौबीसी के रूप में मौजूद छोटी छोटी-46 रियासतों को क्रमशः जीतकर एक छत्र के नीचे संगठित किया तबसे यह एकीकृत नेपाल राष्ट्र विश्व के एकमात्र हिन्दू अधिराज्य के रूप में सर्वप्रभुत्व सम्पन्न स्वतन्त्र राष्ट्र रहा है, जिसका भारत के साथ समान धर्म, संस्कृति, रक्त, वर्ण और समाज व्यवस्था के कारण सहोदर भाई जैसा निकट सम्बन्ध है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि विस्तारवादी, अविश्वसनीय, महत्त्वाकांक्षी एवं बर्बर साम्यवादी गणराज्य चीन और भारत के बीच में देवात्मा हिमालय की गोद में बसा यह नेपाल बफर स्टेट के रूप में हमारा प्रहरी और रक्षा कवच भी रहा है। इसलिये इसके उत्थान-हानि से ही-पतन या लाभनहीं यहाँ की सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं से हमारा देश भी प्रभावित होता रहा है। नेपाल का हिन्दू अधिराज्य और वहाँ हिन्दू

राजतंत्र का होना ही नहीं अपितु भारत से इसका आत्मीय विचार, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सम्बन्ध भी कई हिन्दू विरोधी एवं भारत विरोधी शक्तियों को हजम नहीं हो रहा था। क्योंकि हिन्दू राष्ट्र तथा हिन्दू राजा होने के नाते न तो साम्यवादी अपना खेल खेल पा रहे थे, न ही इस्लामी आतंकवादी नंगा नाच कर पा रहे थे और न ही ईसाई मिशनरियाँ मुक्त रूप से नेपाल की बहुसंख्य हिन्दू आबादी को धर्मान्तरित कर पा रही थीं। नेपाल की वर्तमान राजनीतिक त्रासदी इन्हीं उपर्युक्त शक्तियों के षड्यन्त्रों और दुश्चक्रों का परिणाम है जिसका दूरगामी असर केवल नेपाल की सम्प्रभुता और अखण्डता के लिए ही खतरनाक नहीं बल्कि भारत के हितों पर भी पड़ना सुनिश्चित है। धीरेधीरे - मीठे जहरके रूप में वह अपना असर दिखा भी रहा है। 18 मई, 2006 को नेपाल को हिन्दू राष्ट्र से सेकुलर राष्ट्र बनाना, राजा की शक्तियों को धीरेधीरे कम करने - के उपरान्त28 मई, 2008 को नेपाल को गणराज्य घोषित करना और 30 मई, 2008 को माओवादी सरगना द्वारा नेपाल को साम्यवादी गणराज्य बनाने की धमकी देने के बाद अब भारत नेपाल की सन्-1950 की 'पीस एण्ड फ्रैण्डशिप की ट्रीटी' को समाप्त करने की धमकी इस दिशा में उठ रहे खतरनाक कदम है। नेपाल की वर्तमान स्थिति भारत की विदेश नीति की विफलता को प्रदर्शित करती है, साथ ही भारत के सत्ताधीशों के उस चरित्र को भी उजागर करती है जो उन्हें अपनी सत्ता के लिए राष्ट्र हितों को दी जा रही तिलांजलि के रूप में प्रदर्शित करता है। नेपाल में ये सब दृश्य किसी चीरहरण से कम नहीं। अगर अब भी भारत के सत्ताधीश नेपाल की स्थिति पर धृतराष्ट्र की तरह मौन रहे तो भारत की उत्तरी सीमा पर जहाँ चीन खड़ा दिखाई देगा वहीं पाकिस्तान से बांग्लादेश तक आईके .आई.एस. ग्रीन कॉरीडोर के रूप में मुगलिस्तान तथा नेपाल के पशुपतिनाथ से भारत के तिरुपति तक रेड कॉरीडोर के रूप में माओलैण्ड का खतरनाक दृश्य दृष्टिगोचर होता दिखाई देगा।